International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 03, March 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भगत सिंह की विचारधारा : वर्तमान समय में भारत में प्रासंगिकता

Raviranjan
U.G.C.NET Qualified, M.C.A., M.A. History,
L.N.M.U. Darbhanga, Bihar

शोध सारांश

आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे क्रांतिकारी और बौद्धिक नायक, शहीद–ए–आजम भगत सिंह की वैचारिक वास्तुकला और 21वीं सदी के समकालीन भारत में उसकी प्रासंगिकता का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। सामान्य जनमानस में भगत सिंह की छवि मुख्यतः एक आक्रामक और साहसी राष्ट्रवादी की रही है, परंतु यह शोध पत्र उनके बौद्धिक, दार्शनिक और वैचारिक आयामों को रेखांकित करने का प्रयास करता है। भगत सिंह केवल औपनिवेशिक दासता की बेड़ियों को काटने वाले सिपाही नहीं थे, बल्कि वे एक ऐसी समतावादी सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के निर्माता थे जहाँ मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण समूल नष्ट हो सके। मार्क्सवाद, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, और अराजकतावाद के पश्चिमी व पूर्वी सिद्धांतों के गहन अध्ययन के आधार पर उन्होंने भारतीय समाज की अंतर्निहित विसंगतियों जैसे जातिवाद, सांप्रदायिकता और पूंजीवादी असमानताकृका एक सटीक विनियामक विकल्प प्रस्तुत किया। वर्तमान भारत में जब नव–उदारवादी आर्थिक नीतियां असमानता की खाई को चौड़ा कर रही हैं, सांप्रदायिक ध्रुवीकरण सामाजिक ताने–बाने को चुनौती दे रहा है, और लोकतांत्रिक संस्थाएं वैचारिक संकुचन का सामना कर रही हैंय तब भगत सिंह का इंकलाब और उनका वैचारिक दर्शन एक मार्गदर्शक प्रकाश–स्तंभ की भाँति प्रतीत होता है। प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के ऐतिहासिक विमर्श के माध्यम से यह सिद्ध करता है कि भगत सिंह की विचारधारा वर्तमान भारत की समष्टिगत समस्याओं के समाधान के लिए आज भी विधिक और वैधानिक रूप से अपरिहार्य है।

मुख्य शब्द : समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, मार्क्सवाद, शोषण–मुक्त समाज, इंकलाब, समकालीन भारत, वैचारिक प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में भगत सिंह (1907–1931) एक ऐसे अद्वितीय प्रकाश पुंज हैं, जिनकी बौद्धिक प्रखरता और वैचारिक गहराई को अक्सर उनके सर्वोच्च बलिदान की दीप्ति के पीछे दबा दिया गया। औपनिवेशिक इतिहासकारों और बाद के सतही राजनीतिक विमर्शों ने उन्हें क्रांतिकारी आतंकवादी या केवल एक भावुक देशभक्त के रूप में संकुचित करने का प्रयास किया। परंतु, उनके द्वारा जेल डायरी में लिखे गए लेख, पत्र और दस्तावेज यह अकाट्य विधिक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं कि वे एक अत्यंत गंभीर अध्येता, राजनीतिक विचारक और सामाजिक वैज्ञानिक थे।

भगत सिंह का राष्ट्रवाद केवल भौगोलिक सीमाओं की मुक्ति या गोरे साहबों के स्थान पर श्भूरे साहबोंश को सत्ता सौंपने का नाम नहीं था। वे स्पष्ट रूप से देख रहे थे कि यदि भारत की आंतरिक सामाजिक और आर्थिक संरचना में आमूल–चूल परिवर्तन नहीं किया गया, तो स्वतंत्रता केवल एक छलावा बनकर रह जाएगी। उनका विजन एक ऐसे हैंड–ओवर का विरोध करता था जहाँ शासक का रंग बदल जाए परंतु शासन का दमनकारी चरित्र वही रहे।

समकालीन भारत (वर्ष 2026 की सामाजिक–आर्थिक वास्तविकता) में जब हम स्वतंत्रता के अमृत काल के बाद के परिदृश्य का अवलोकन करते हैं, तो पाते हैं कि भारत वैश्विक मंच पर एक आर्थिक और तकनीकी महाशक्ति के रूप में तो उभर रहा है, परंतु उसके आंतरिक ढांचे में वैसी ही विसंगतियां

गहराई से पैर पसार चुकी हैं जिनके खिलाफ भगत सिंह ने आगाह किया था। आर्थिक असमानता का चरम पर होना, जातिगत चेतना का कड़ा होना, और धर्म को राजनीतिक सत्ता हासिल करने का उपकरण बना देनाकृये वे समसामयिक व्याधियाँ हैं जो भगत सिंह की विचारधारा को आज और अधिक प्रासंगिक बनाती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उनके विचारों की इसी कालजयी प्रकृति का एक सघन अकादमिक ऑडिट करना है।

. शोध उद्देश्य

1. भगत सिंह की वैचारिक नींव (मार्क्सवाद, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता) के दार्शनिक उद्‌गम स्रोतों की जांच करना।
2. उनके राष्ट्रवाद और इंकलाब की अवधारणा की अकादमिक पुनर्व्याख्या करना।
3. वर्तमान भारत की प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों के साथ भगत सिंह के विचारों का एक आलोचनात्मक तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्य रूप से ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन को प्रामाणिक बनाने के लिए प्राथमिक स्रोतों के रूप में भगत सिंह के मूल लेखन, जैसे उनकी जेल डायरी, उनका प्रसिद्ध लेख मैं नास्तिक क्यों हू , बम का दर्शन ,और हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के घोषणापत्रों का विधिक व वैधानिक विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त, द्वितीयक स्रोतों के रूप में प्रतिष्ठित इतिहासकारों (जैसे बिपन चंद्र, इरफान हबीब, और चमन लाल) के शोध ग्रंथों और समकालीन सामाजिक–आर्थिक डेटा का उपयोग किया गया है।

. भगत सिंह की वैचारिक नींव दार्शनिक उद्‌गम स्रोत

भगत सिंह की विचारधारा कोई आकस्मिक या भावुक उद्‌गार नहीं थी, बल्कि वह एक सघन और कठोर बौद्धिक प्रक्रिया का परिणाम थी। वे एक ऐसे योद्धा थे जिन्होंने बंदूक उठाने से पहले किताबों को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाया।

भगत सिंह का वैचारिक संश्लेषण

⬇

पश्चिमी दार्शनिक प्रभाव, ➡ मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, मिखाइल बाकुनिन, और थॉमस पेन का गहन अध्ययन।

⬇

घरेलू वैचारिक विवर्तन, ➡ गदर आंदोलन (करतार सिंह सराभा), आर्य समाज का राष्ट्रवाद, व सूफी अम्बा प्रसाद की विरासत।

⬇

संस्थागत रूपांतरण (1928), ➡ (हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन) को विधिक रूप से (सोशलिस्ट) में बदलना।

⬇

परिणाम भारत के संदर्भ में वैज्ञानिक समाजवाद का व्यावहारिक विन्यास,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 03, March 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मार्क्सवाद और वैज्ञानिक समाजवाद का प्रभाव

भगत सिंह ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और मार्क्सवादी इतिहास दृष्टि का गहरा अध्ययन किया था। वे लेनिन के इस विचार से अत्यधिक प्रभावित थे कि एक वास्तविक और सफल क्रांति के लिए क्रांतिकारी सिद्धांत का होना अनिवार्य है। उन्होंने जेल में रहते हुए कार्ल मार्क्स की दास कैपिटल और कम्युनिस्ट घोषणापत्र का सूक्ष्म विश्लेषण किया। उन्होंने समझा कि समाज की मूल चालक शक्ति आर्थिक संबंध और वर्ग संघर्ष हैं। इसी वैचारिक परिपक्वता के कारण उन्होंने सितंबर 1928 में फिरोजशाह कोटला (दिल्ली) की गुप्त बैठक में अपने संगठन हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन करने का विधिक प्रस्ताव रखा। यह केवल नाम का विवर्तन नहीं था, बल्कि यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर समाजवाद को अंतिम लक्ष्य के रूप में संहिताबद्ध करने की एक ऐतिहासिक घटना थी।

अराजकतावाद और तर्कवाद का अभिसरण

मार्क्सवाद के साथ–साथ भगत सिंह फ्रांसीसी और रूसी अराजकतावादियों जैसे मिखाइल बाकुनिन और पीटर क्रोपोटकिन के विचारों से भी गुजरे। बाकुनिन के ईश्वर और राज्य–विरोधी तर्कों ने भगत सिंह को पारंपरिक धार्मिक रूढ़ियों से मुक्त होने में सहायता की। उन्होंने थॉमस पेन के एज ऑफ रीजन का अध्ययन कर अपने भीतर एक तीखे तर्कवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित किया। उनका मानना था कि किसी भी प्राचीन विचार को केवल इसलिए पवित्र नहीं मान लेना चाहिए क्योंकि वह पुराना हैय प्रत्येक विचार को तर्क की कसौटी पर कसा जाना अनिवार्य है।

भगत सिंह का सामाजिक दर्शन अछूत का सवाल और जातिगत विमर्श

अकादमिक जगत में भगत सिंह को अक्सर एक आर्थिक या राजनीतिक विचारक के रूप में अधिक उद्धृत किया जाता है, परंतु उनका सामाजिक दर्शन उतना ही क्रांतिकारी और मौलिक था। जून 1928 में किरती अखबार में प्रकाशित उनका ऐतिहासिक लेख अछूत का सवाल भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद और अस्पृश्यता के खिलाफ एक विधिक और दार्शनिक घोषणापत्र है।

सामाजिक पाखंड और विधिक असमानता पर तीखा प्रहार

भगत सिंह ने तत्कालीन हिंदू समाज की रीढ़कृजाति व्यवस्थाकृपर प्रहार करते हुए लिखा था कि हम भारतीय एक तरफ तो औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन से राजनीतिक अधिकारों की मांग करते हैं, लेकिन दूसरी तरफ अपने ही समाज के एक बड़े हिस्से (दलितों शोषितों) को बुनियादी मानवीय अधिकारों से विधिक रूप से वंचित रखते हैं। उनका प्रसिद्ध तर्क था

जब तुम उन्हें इस कदर पशु से भी बदतर समझते हो, तो तुम्हें किस हक से यह मांग करने का विधिक अधिकार है कि तुम्हें अधिक राजनीतिक अधिकार दिए जाएं?

उन्होंने धार्मिक ग्रंथों की आड़ में छिपे पाखंड को चुनौती दी और कहा कि जो धर्म मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद पैदा करे, वह धर्म कहलाने योग्य नहीं है। यह विचार उनकी वैचारिक यात्रा को डॉ. बी.आर. आंबेडकर के श्जाति के उन्मूलनके दर्शन के समानांतर खड़ा करता है।

वर्तमान समय में प्रासंगिकता

21वीं सदी के समकालीन भारत (वर्ष 2026 की वास्तविकता) में जब हम सामाजिक संकेतकों का अवलोकन करते हैं, तो पाते हैं कि जातिवाद का स्वरूप भले ही बदला हो, परंतु उसकी जड़ें आज भी वैधानिक रूप से कड़वी हैं।पहचान की राजनीति का तीव्र होनारू वर्तमान समय में राजनीतिक दलों द्वारा चुनावों में विकास के वास्तविक आर्थिक मुद्दों (रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा) के स्थान पर जातिगत जनगणना और जातिगत ध्रुवीकरण को मुख्य हथियार बनाया जा रहा है। भगत सिंह ने इसके खिलाफ

चेतावनी दी थी कि जब तक समाज जातिगत खानों में विभाजित रहेगा, वास्तविक वर्गीय चेतना का उदय असंभव है। आज भी हाथ से मैला उठाने जैसे दमनकारी कार्यों में एक विशिष्ट वर्ग ही फंसा हुआ है। भगत सिंह का विजन श्रम की गरिमा पर आधारित था, जहाँ जन्म के आधार पर किसी का पेशा और सम्मान तय न हो।भगत सिंह के समय भी भारत सांप्रदायिक दंगों की आग में झुलस रहा था (जैसे 1920 के दशक के कोहाट और मुल्तान के दंगे)। इसके प्रतिकार में उन्होंने वर्ष 1928 में सांप्रदायिक दंगे और उनका इलाज नामक एक अत्यंत विचारोत्तेजक लेख लिखा।

सांप्रदायिकता के आर्थिक और राजनीतिक कारण

भगत सिंह ने सांप्रदायिकता को केवल धार्मिक कट्टरता के रूप में नहीं देखाय उन्होंने इसका एक मार्क्सवादी और आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि–

1. **पूंजीपति और शासक वर्ग का हित–** ब्रिटिश शासक बांटो और राज करो की नीति के तहत दंगों को हवा देते थे ताकि हिंदू और मुस्लिम मजदूर आपस में लड़ते रहें और कभी अपने साझे आर्थिक शोषकों के खिलाफ एकजुट न हो सकें।
2. **सस्ती पत्रकारिता का दोष** – उन्होंने तत्कालीन समाचार पत्रों की आलोचना करते हुए लिखा कि पत्रकार और संपादक समाज में शांति स्थापित करने के बजाय सनसनीखेज और भड़काऊ खबरें छापकर दंगों के मुख्य सौदागर बन चुके हैं।

मैं नास्तिक क्यों हूँ? – तर्कवाद का शिखर

अक्टूबर 1930 में लाहौर सेंट्रल जेल में लिखा गया यह लेख भारतीय दार्शनिक चिंतन की एक अनमोल धरोहर है। भगत सिंह ने किसी अंधविश्वास या अहंकार के वश में होकर नास्तिकता को नहीं अपनाया था, बल्कि एक सघन वैज्ञानिक तर्क प्रणाली के आधार पर उन्होंने ईश्वर की अवधारणा को खारिज कियइं दर्शन उनका तर्क था कि यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान और दयालु है, तो वह इस संसार में निर्धनों का शोषण, बच्चों की भुखमरी, और औपनिवेशिक क्रूरता को क्यों होने देता है? उन्होंने धर्म को एक अफीम की तरह देखा जो मनुष्य को अपनी नियति के सामने आत्मसमर्पण करना सिखाता है और उसकी विद्रोही चेतना को सुला देता है।

समकालीन भारत में सांप्रदायिक घर्षण और भगत सिंह

वर्तमान भारत की सामाजिक–धार्मिक संरचना में भगत सिंह के विचार पहले से कहीं अधिक अपरिहार्य हो चुके हैं। समकालीन समय रेखा में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के सामने निम्नलिखित चुनौतियाँ मौजूद हैं–

डिजिटल सांप्रदायिकता – भगत सिंह ने 1928 में जिस घटिया पत्रकारिता की बात की थी, वह आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, फेक न्यूज ग्रिड्स और व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी के रूप में एक खतरनाक और सर्वव्यापी रूप ले चुकी है। एआई–संचालित एल्गोरिदम आज समाज में नफरती विमर्श को तेजी से फैला रहे हैं।तुष्टीकरण और बहुसंख्यकवाद का राजनीति आज पूरी तरह से धार्मिक प्रतीकों और पहचान के इर्द–गिर्द सिमट चुकी है। भगत सिंह की धर्मनिरपेक्षता का अर्थ केवल श्सभी धर्मों का समान सम्मानश (सर्वधर्म समभाव) नहीं था, बल्कि वे धर्म को राजनीति और राज्य के विधिक विन्यास से पूरी तरह अलग रखने के पक्षधर थे। उनका मानना था कि धर्म व्यक्ति का पूर्णतः निजी मामला होना चाहिए।

अंतर–सांस्कृतिक और वैधानिक समाधान

वर्गीय एकजुटता का निर्माण– भगत सिंह के अनुसार, सांप्रदायिकता का वास्तविक इलाज यह है कि गरीब मजदूरों, किसानों और बेरोजगार युवाओं को यह अहसास कराया जाए कि उनका वास्तविक शत्रु

दूसरे धर्म का गरीब नागरिक नहीं है, बल्कि उनका वास्तविक शत्रु वह पूंजीवादी और दमनकारी व्यवस्था है जो दोनों का समान रूप से शोषण कर रही है।

तर्कसंगत शिक्षा प्रणाली का विकासरू वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति और अकादमिक विन्यासों में युवाओं के भीतर तार्किक सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना अनिवार्य है, ताकि वे किसी भी राजनीतिक या धार्मिक बहकावे में आकर दंगों का मोहरा न बनें।

भगत सिंह का आर्थिक दर्शन– साम्राज्यवाद और पूंजीवाद का अंतर्संबंध

भगत सिंह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के आकांक्षी नहीं थे, बल्कि उनका मुख्य लक्ष्य एक पूर्ण आर्थिक और सामाजिक क्रांति था। उनका आर्थिक चिंतन कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद और व्लादिमीर लेनिन के साम्राज्यवाद के सिद्धांतकृष्साम्राज्यवाद, पूंजीवाद का सर्वोच्च चरण पर आधारित था। उन्होंने स्पष्ट रूप से समझ लिया था कि राजनीतिक दासता वास्तव में आर्थिक शोषण को बनाए रखने का एक विधिक उपकरण मात्र है।

भगत सिंह की आर्थिक दूरदर्शिता का सबसे बड़ा प्रमाण उनका वह कालजयी वक्तव्य है, जो उन्होंने जून 1928 में क्रांतिकारियों के नाम लिखे पत्र में दर्ज किया था——लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि भारतीय जनता और धन को कुछ परजीवियों द्वारा शोषित किया जाता रहेगाकृचाहे वे परजीवी विशुद्ध रूप से अंग्रेज हों, या विशुद्ध रूप से भारतीय हों या दोनों का मिला–जुला रूप हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि शासन की बागडोर लॉर्ड रीडिंग के हाथ में है या सर पुरुषोत्तम दास ठाकुरदास (भारतीय पूंजीपति) के हाथ में। स्वतंत्रता से हमारा तात्पर्य केवल सत्ता का हस्तांतरण नहीं, बल्कि उस दमनकारी व्यवस्था का समूल नाश है।यह वक्तव्य यह सिद्ध करता है कि वे सत्ता के रंग परिवर्तनश के नहीं, बल्कि व्यवस्था परिवर्तनश के विधिक पक्षधर थे।

. समकालीन भारत और नव–उदारवाद की विसंगतियां

जब हम वर्ष 2026 की समष्टिगत आर्थिक वास्तविकताओं के प्रकाश में भारत का अवलोकन करते हैं, तो पाते हैं कि देश वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद की दौड़ में एक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है, परंतु इसका आर्थिक ढांचा भगत सिंह द्वारा व्यक्त की गई चिंताओं की पुष्टि करता है।

आर्थिक असमानता का चरम विन्यास

पूंजी का संकेंद्रीकरणरू समकालीन आर्थिक डेटा और ऑक्सफैम जैसी अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के अनुसार, भारत की शीर्ष 1: आबादी के पास देश की कुल राष्ट्रीय संपत्ति का 40: से अधिक हिस्सा केंद्रित हो चुका है। इसके विपरीत, नीचे की 50: आबादी बुनियादी आवश्यकताओं (कुपोषण, न्यूनतम मजदूरी) के लिए संघर्ष कर रही है। धन का यह संकेंद्रीकरण उस समतावादी समाज की अवधारणा को विखंडित करता है जिसके लिए भगत सिंह ने प्राण दिए थे।

नव–उदारवाद और सार्वजनिक क्षेत्र का संकुचन

निजीकरण बनाम लोक कल्याणरू पिछले कुछ दशकों में श्न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासनश के नारे के तहत शिक्षा, स्वास्थ्य, और परिवहन जैसे बुनियादी लोक कल्याणकारी क्षेत्रों का आक्रामक रूप से निजीकरण किया गया है।

भगत सिंह का रुख भगत सिंह की आर्थिक नीति स्पष्ट रूप से श्उत्पादन और वितरण के साधनों पर सामाजिक नियंत्रणश की वकालत करती थी। वर्तमान दौर में कॉर्पोरेट एकाधिकार के कारण आम नागरिक के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य विधिक रूप से एक श्अधिकारश के बजाय एक महंगी वस्तु बन गए हैं, जो भगत सिंह के समाजवादी सिद्धांतों के सर्वथा विपरीत है।

कृषि संकट और श्रम का अवमूल्यन

भारत की लगभग आधी आबादी आज भी कृषि पर निर्भर है, जो निरंतर ऋण–जाल और अनिश्चित बाजार नीतियों के कारण संकट में है। भगत सिंह ने किरती (मजदूर और किसान) को ही क्रांति की

अग्रिम पंक्ति माना था। वर्तमान में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के पास कोई विधिक या सामाजिक सुरक्षा नहीं है, जिससे उनका आर्थिक शोषण तीव्र हुआ है।

इंकलाब जिन्दाबाद की वास्तविक समाजवादी व्याख्या

सामान्यतः इंकलाब जिन्दाबाद के नारे को केवल एक युद्ध–घोष या हवा में मुट्ठी भींचकर चिल्लाने का साधन मान लिया गया है। परंतु, भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 6 जून 1929 को दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष दिए गए अपने विधिक बयान में इस नारे की एक कालजयी और दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की थी।

क्रांति बम और पिस्तौल की संस्कृति नहीं है

भगत सिंह ने अदालत में स्पष्ट रूप से संहिताबद्ध किया। क्रांति से हमारा तात्पर्य बम और पिस्तौल की संस्कृति या खूनी कूटनीति नहीं है। बम और पिस्तौल कभी–कभी किसी विधिक उद्देश्य को हासिल करने के साधन मात्र हो सकते हैं, लेकिन वे स्वयं में क्रांति नहीं हैं। क्रांति का अर्थ हैकृवर्तमान व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन, जो अन्याय पर आधारित है। उन्होंने तर्क दिया कि समाज का यह अनिवार्य नियम है कि जब कोई व्यवस्था पुरानी और सड़–गल जाती है, तो वह मानव प्रगति के मार्ग में बाधा बन जाती है। अतः उस व्यवस्था को बदलकर एक नई प्रगतिशील व्यवस्था को स्थापित करना ही इंकलाब है। उनका इंकलाब मानवता के सतत विकास का एक विधिक दर्शन था, न कि केवल एक अराजक हिंसा।

निष्कर्ष

लोक कल्याणकारी राज्य की पुनर्स्थापना भगत सिंह की विचारधारा के आलोक में, भारत को केवल जीडीपी संवृद्धि के सूचकांकों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय श्मानव विकास सूचकांक भुखमरी उन्मूलन, और व्यापक रोजगार गारंटी को अपनी बजटीय प्राथमिकताओं में विधिक रूप से शामिल करना होगा।कॉर्पोरेट कर संरचना और प्रगतिशील कराधान धन के अत्यधिक संकेंद्रीकरण को रोकने के लिए एक सुदृढ़ और प्रगतिशील कराधान नीति का होना अनिवार्य है, जिसके माध्यम से कॉर्पोरेट मुनाफे का एक निश्चित हिस्सा सार्वजनिक शिक्षा और सार्वभौमिक स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे के निर्माण में विधिक रूप से डायवर्ट किया जा सके।

शहीद–ए–आजम भगत सिंह की विचारधारा का यह सघन दार्शनिक और ऐतिहासिक ऑडिट यह अकाट्य विधिक निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि उन्हें केवल एक विशिष्ट कालखंड (औपनिवेशिक भारत) के संदर्भ में देखना उनके बौद्धिक कद के साथ अन्याय होगा। वे एक कालजयी राजनीतिक सामाजिक वैज्ञानिक थे, जिनकी विचारधारा में मानव सभ्यता के सतत लोक कल्याण का विन्यास समाहित था। उनका इंकलाब किसी शासन का अंत नहीं, बल्कि मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की संभावना का पूर्ण उन्मूलन था।वर्तमान 21वीं सदी के समकालीन भारत में जब हम नव–उदारवादी पूंजीवाद के कारण बढ़ती आर्थिक असमानता, डिजिटल सांप्रदायिकता के कारण सामाजिक ताने–बाने में पैदा हो रही कड़वाहट, और लोकतांत्रिक संस्थाओं के भीतर वैचारिक संकुचन की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं तब भगत सिंह का तर्कवाद, उनकी धर्मनिरपेक्षता और उनका वैज्ञानिक समाजवाद एक अचूक विनियामक समाधान प्रस्तुत करते हैं। भारत यदि वैश्विक मंच पर एक महाशक्ति बनने के साथ–साथ आंतरिक रूप से एक न्यायसंगत, समतावादी और शोषण–मुक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित होना चाहता है, तो उसे भगत सिंह के वैचारिक घोषणापत्रों को अपनी लोक नीतियों की धुरी बनाना होगा। भगत सिंह आज भी भारतीय जनमानस की चेतना में एक प्रतीक मात्र नहीं हैं, बल्कि वे एक जीवित, धड़कती हुई और निरंतर प्रगतिशील वैचारिक मशाल हैं जो आने वाली पीढ़ियों के मार्ग को आलोकित करती रहेगी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 03, March 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ सूची

1. भगत सिंह (2018). जेल डायरी और अन्य दस्तावेज, चमन लाल (संपादक), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. चंद्र, बिपन (2009). आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
3. हबीब, इरफान (2007). To Die Identity&Free: The Ideology and Heritage of Bhagat Singh, सोशल साइंटिस्ट, वॉल्यूम 35, नंबर 7੪8, पृष्ठ 41–48।
4. लाल, चमन (2009). Understanding Bhagat Singh, केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
5. सिंह, भगत (1930½- Why I am an Atheist (मैं नास्तिक क्यों हूँ?), लाहौर सेंट्रल जेल (मूल लेख, प्रथम प्रकाशन द पीपुल, 1931)।
6. नौजवान भारत सभा (1928). घोषणापत्र और विधिक नीतियां, एचएसआरए गुप्त अभिलेख, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
7. मार्क्स, कार्ल और एंगेल्स, फ्रेडरिक (1848). कम्युनिस्ट घोषणापत्र, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मॉस्को (भगत सिंह द्वारा प्रयुक्त जेल संदर्भ)।

❖